Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت
Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 12.01.2018 मस्जिद बैतुल फ़तूह,मॉर्डन लंदन

सहाबा के उदाहरण देख लो, वास्तव में सहाबा किराम के नमूने ऐसे हैं कि समस्त नबियों की मिसाल हैं उन्होंने बकरियों की भांति अपने प्राण दिए, सहाबा किराम का गिरोह विचित्र गिरोह था, अनुसरणीय और आरणीय गिरोह था। उनके दिल विश्वास से भरे हुए थे।

क़ुर्आन शरीफ़ में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जिन्हें न कोई व्यापार, न कोई क्रय विक्रय अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल करता है।

यह एक ही आयत सहाबा के विषय में पर्याप्त है कि उन्होंने बड़े बड़े परिवर्तन कर लिए थे। सहाबा किराम रिज़वानुल्लाहि अलैहिम ने वह सच्चा सम्बंध और स्नेह ख़ुदा तआला से पैदा कर लिया था कि प्रश्न ही नहीं था कि वे किसी प्रकार भी ख़ुदा तआला से ग़ाफ़िल हों अथवा वे किसी भी बलिदान से बचने वाले हों।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात् हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दिव्य शक्ति का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि मेरा विचार तो यही है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दिव्य शक्ति ऐसी थी कि किसी अन्य नबी को दुनिया में नहीं मिली। इस्लाम की उन्नति का भेद यही है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ुव्वत-ए-जज़्ब (ब्रह्मलीनता) भर पूर थी और फिर आपकी बातों में वह प्रभाव था कि जो सुनता था, मोहित हो जाता था। जिन लोगों को आपने प्रभावित किया उन्हें पवित्र एवं शुद्ध कर दिया।

फिर इस बात को बयान फ़रमाते हुए कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा में किस प्रकार के परिवर्तन उत्पन्न किए आप फ़रमाते हैं कि सहाबा की दशा को देखते हैं तो उनमें कोई झूठ बोलने वाला दिखाई नहीं देता जबकि अरब की आरम्भिक अवस्था पर दृष्टि डालते हैं तो वे पाताल में पड़े हुए दिखाई देते हैं। बुतों की पूजा में लगे हुए थे, अनाथों का माल खाते और हर प्रकार के कुकर्मों में अग्रसर और निश्चिंत थे। डाकुओं की भांति जीवन व्यतीत करते थे मानो सिर से पैर तक गन्दगी में डूबे हुए थे किन्तु ऐसी क्रांति आपने उनमें पैदा की जिसका उदाहरण दूसरी क़ौमों में नहीं मिलता। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह चमत्कार इतना बड़ा है कि यही दुनिया की आँखें खोलने के लिए पर्याप्त है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि एक व्यक्ति का ठीक करना कठिन होता है परन्तु यहाँ तो एक क़ौम तय्यार की गई कि जिन्होंने अपने ईमान और निष्ठा का वह नमूना

दिखाया कि भेड़ बकरी की भांति इस सच्चाई पर बलिदान हो गए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षा, दशा निर्देश और प्रभाव पूर्ण उपदेशों ने उनको दिव्य बना दिया था, लौकिक गुण उनमें पैदा हो गए थे। यह वह नमूना है जो हम इस्लाम का दुनिया के सामने पेश करते हैं। इसी इस्लाम और हिदायत का कारण था जो अल्लाह तआला ने भविष्य वाणी के रूप में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम मुहम्मद रखा, जिससे धरती पर आपकी प्रशंसा हुई क्यूँकि आपने धरती को अमन, सन्धि तथा उच्च स्तरीय आचरण एवं श्रद्धा से भर दिया।

सहाबा के विशेष स्तर तथा उनमें विचित्र बदलाव उत्पन्न होने के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि-

सहाबा का उदाहरण देख लो, सहाबा किराम के नमूने वास्तव में ऐसे हैं कि समस्त नबियों के उदाहरण हैं। ख़ुदा को तो कर्म ही पसन्द हैं। उन्होंने बकरियों की भांति अपनी जानें दीं और उनका उदाहरण ऐसा है जैसे नबुव्वत का एक क्रम आदम अलैहिस्सलाम से चला आता है, किन्तु समझ न आती थी इसकी, परन्तु सहाबा किराम ने चमका कर दिखला दिया और बतला दिया कि सत्य एवं निष्ठा इसे कहते हैं फिर जैसी असुविधा का जीवन उन्होंने व्यतीत किया उसका उदाहरण भी कहीं नहीं पाया जाता। सहाबा किराम का गिरोह अदभुत गिरोह था, अनुसरण योग्य और सम्मान योग्य गिरोह था, उनके दिल विश्वास से भरे हुए थे। जब विश्वास होता है तो प्रथम प्रथम माल इत्यादि देने को दिल चाहता है फिर जब श्रद्धा बढ़ जाती है तो निष्ठावान व्यक्ति ख़ुदा के लिए जान देने को तय्यार हो जाता है। फिर सहाबा का उच्च स्तर बयान फ़रमाते हुए एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि- رِّجَالٌ لَّا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَن ذِكْرِ اللَّهِ

क़ुर्आन शरीफ़ में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जिन्हें न कोई व्यापार और न कोई ख़रीद फ़रोख़्त अल्लाह के ज़िक्र से मूर्छित रखती है। आप इसकी व्याख्या करते हुए फ़रमाते हैं कि यह एक ही आयत सहाबा के हक़ में काफ़ी है कि उन्होंने बड़े बड़े बदलाव किए थे। निर्धन लोग तथा इतना साहस और बहादुरी! आश्चर्य होता है। फ़रमाते हैं कि वे ऐसे पुरुष हैं कि उनको अल्लाह की याद से न कोई व्यापार रोक सकता है तथा न ही बेचना अवरुद्ध उत्पन्न करता है अर्थात अल्लाह की मुहब्बत में इतना उच्च स्तर रखते हैं कि सांसारिक व्यस्तताएँ चाहे कितनी ही अधिक क्यूँ न हों उनकी आस्था में रुकावट पैदा नहीं कर सकतीं।

अतः सहाबा किराम रिज़वानुल्लाहि अलैहिम ने वह सच्चा सम्बंध और इश्क़ ख़ुदा तआला से पैदा कर लिया था कि प्रश्न ही नहीं था कि वे किसी भी प्रकार से ख़ुदा के प्रति ग़ाफ़िल हों अथवा वे किसी भी बलिदान से दूर भागने वाले हों। सहाबा के अनेक उदाहरण हैं।

हज़रत ख़ब्बाब बिन अलअरत के विषय में आता है कि जब उनका अन्तिम समय निकट आया तो उन्होंने अपना कफ़न देखने के लिए मंगवाया तथा वह एक बड़ा उत्तम कपड़े का कफ़न था, अपने निकट सम्बंधियों से कहा कि इतना अच्छा कफ़न मुझे दोगे? और रो पड़े तथा कहने लगे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा हज़रत हमज़ा को एक चादर कफ़न के लिए मिली थी और वह भी इतनी छोटी थी कि पाँव ढांकते तो सिर नंगा हो जाता था, सिर ढांकते तो पाँव नंगे हो जाते थे। तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिदायत पर पाँव को घास से ढक दिया गया। फिर बड़ी करुणा से कहने लगे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में एक दीनार अथवा दिरहम का भी मैं स्वामी नहीं था तथा आज रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कृपा की बरकत से, अल्लाह तआला के पुरस्कारों के कारण, उन बलिदानों के क़बूल होने के कारण मुझे अल्लाह तआला ने इतना धन दिया है कि मेरे घर के कोने में जो सन्दूक़ पड़ा है उसमें ही चालीस हज़ार दिरहम पड़े हुए हैं। कहने लगे कि अल्लाह तआला ने इतना दिया है कि मुझे डर है कि कहीं अल्लाह तआला ने हमारे कर्मों का प्रतिफल इस संसार में ही न दे दिया हो और कहीं आख़िरत के जीवन में जो प्रतिफल हैं उनसे वंचित न कर दिया जाऊँ। कहने लगे कि वे लोग जो हमसे पहले चले गए उन्होंने सांसारिक धन धान्य, जिससे हम लाभान्वित हो रहे हैं, उससे लाभ नहीं

उठाया।

फिर मुआज़ बिन जबल एक सहाबी थे उनके विषय में आता है कि तहज्जुद अदा करने वाले तथा लम्बी इबादत करने वाले थे। उनकी तहज्जुद की नमाज़ का उनके निकट वर्तियों ने इस प्रकार चित्रण किया है कि अल्लाह तआला के समक्ष निवेदन करते कि ऐ मेरे मौला! इस समय सब सोए हुए हैं, आँखें सोई हुई हैं। ऐ अल्लाह! तू ज़िन्दा तथा सर्वस्व है, मैं तुझ से जन्नत मांगता हूँ परन्तु उसकी प्रप्ति में कुछ सुस्त हूँ अर्थात कर्म करने में मैं ढीला हूँ तथा आग से दूर भागने में दुर्बल और कमज़ोर हूँ। मुझे पता है कि नर्क की आग भी है तथा उसके लिए नेकियाँ करनी पड़ती हैं लेकिन उससे बचने के लिए मैं बड़ा दुर्बल हूँ। ऐ अल्लाह! तू मुझे अपने पास से हिदायत प्रदान कर दे।

इन सहाबा में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दिव्य शक्ति ने एक क्रांति उत्पन्न कर दी थी अन्यथा ये प्रेम और मुहब्बत की दास्तानें कभी न लिखी जातीं। अल्लाह तआला के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जो मुहब्बत थी, वह भी ऐसी कि जिसका उदाहरण नहीं मिलता।

ओहद के युद्ध में जहाँ हज़रत तलहा के इश्क़ व मुहब्बत की दास्तान का वर्णन मिलता है कि किस प्रकार उन्होंने अपना हाथ आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र चेहरे के सामने रखा कि कोई तीर आपको न लगे वहाँ हज़रत शम्मास ने भी बड़ी महान भूमिका निभाई। हज़रत शम्मास, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने खड़े हो गए तथा प्रत्येक वार अपने ऊपर लिया। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत शम्मास के बारे में फ़रमाया कि शम्मास को यदि मैं किसी चीज़ से तुलना दूँ तो ढाल से तुलना दूँगा कि वे ओहद के मैदान में मेरे लिए ढाल ही तो बन गया था। वह मेरे आगे पीछे दाएँ बाएँ सुरक्षा करते हुए अन्तिम समय तक लड़ता रहा।

सत्य बात कहना तथा किसी से न डरना सहाबा का नियम था। हज़रत सईद बिन ज़ैद के विषय में आता है कि एक बार कूफ़े में अमीर मुआवियः के द्वारा नियुक्त गवर्नर जामअ मस्जिद में बैठे थे। हज़रत सईद भी वहाँ पधारे। गवर्नर ने बड़े सत्कार के साथ उनका स्वागत किया, अपने साथ बिठाया। इसी बीच वहाँ कूफ़े का एक व्यक्ति आया तथा उसने हज़रत अली को बुरा भला कहना शुरु कर दिया। हज़रत सईद इस पर बड़े क्रोधित हुए और फ़रमाया कि मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि अबू बकर, उसमान, अली, तलहा, जुबैर बिन अव्वाम, सअद और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ जन्नत में होंगे और कहने लगे कि दसवाँ भी है उसका नाम मैं नहीं लेता। जब आग्रह करके पूछा गया तो बताया कि वह दसवाँ मैं अर्थात सईद बिन ज़ैद हूँ। आपके माध्यम से यह हदीस भी बयान की गई है कि सबसे बड़ा ब्याज अर्थात हराम चीज़ किसी के सम्मान पर अनर्थ ही आक्रमण करना है। आज इसी चीज़ को मुसलमानों ने भुला दिया है तथा ऊपर के स्तर से लेकर नीचे तक हम देखते हैं कि मुसलमान मुसलमान के सम्मान पर अपने लाभ के लिए आक्रमण करता है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- प्रत्येक सहाबी का अपना अपना अंदाज़ है। एक अवसर पर हज़रत उमर ने हज़रत सुहेब से कहा कि तुम अधिकता से लोगों को खाना इत्यादि खिलाते हो, मुझे डर है उसमें व्यर्थ व्यय न होता हो। हज़रत सुहेब ने कहा कि यह जो मैं खाना खिलाता हूँ यह भी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक निर्देश के अनुसार है। आपने फ़रमाया कि तुममें से सर्वश्रेष्ट वे लोग हैं जो लोगों को खाना खिलाते हैं तथा सलाम को रिवाज देते हैं। कहते हैं, मैंने इस नसीहत को पल्ले बाँध लिया है तथा मैं उचित आवश्यकता के बिना माल ख़र्च नहीं करता, व्यर्थ व्यय नहीं करता। हज़रत सुहेब का स्तर हज़रत उमर की दृष्टि में भी बहुत उच्च था अतः हज़रत उमर ने अपना जनाज़ा हज़रत सुहेब से पढ़वाने की नसीहत फ़रमाई थी तथा जब तक अगले ख़लीफ़ः का चयन न हो गया, नमाज़ों की इमामत भी यही कराते रहे थे।

हज़रत उसामा जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा स्वतंत्र किए हुए ग़ुलाम हज़रत ज़ैद के बेटे थे, हज़रत उसामा वे भाग्यशाली व्यक्ति थे जिन्हें आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने प्यार का प्रमाण पत्र

दिया था किन्तु जहाँ प्रशिक्षण तथा दीन का मामला है वहाँ केवल और केवल अल्लाह तआला के आदेश हैं फिर यह निजी प्रेम समाप्त हो जाता है। एक घटना आती है कि जब युद्ध के समय एक काफ़िर उसामा के सामने आया तो उसने तुरन्त कलिमा पढ़ दिया लेकिन आपने उसे फिर भी मार दिया कि मौत के भय के कारण यह कलिमा पढ़ रहा है। हज़रत उसामा कहते हैं कि मैंने इस घटना को आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने बयान किया तो आपने फ़रमाया कि तुमने उस व्यक्ति के कलिमा पढ़ने के बाद भी उसका वध कर दिया? मैंने निवेदन किया कि उसने केवल बचने के लिए कलिमा पढ़ा था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- क्या तुमने उसका दिल चीर कर देख लिया था और फिर फ़रमाया- क्या तू ने उसे कलिमा-ए-शहादत पढ़ने के बावजूद मार दिया? उसामा कहते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह वाक्य इतनी बार दोहराया कि मैंने चाहा कि काश, आज से पहले मैं मुसलमान न होता। उसामा कहते हैं कि मैंने प्रतिज्ञा कर ली कि कभी भविष्य में किसी व्यक्ति का जो ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़े, वध नहीं करुंगा।

काश, ये बातें आज के मुसलमानों को भी समझ आ जाएँ। इस्लाम के नाम पर अन्य लोगों पर तो अत्याचार कर रहे हैं, वे कर ही रहे हैं, आपस में मुसलमान मुसलमानों की हत्या कर रहा है। मुसलमान ने मुसलमान का वद्ध किया है। वही जो कलिमा पढ़ने वाले हैं वही दूसरों को मार रहे हैं, यमन में कलिमा पढ़ने वाले कलिमा पढ़ने वालों को मार रहे हैं तथा दूसरे अत्याचार भी हो रहे हैं। अल्लाह तआला इन मुसलमानों को भी बुद्धि प्रदान करे कि सहाबा की मुहब्बत तथा रसूल से प्रेम के केवल नारे न लगाएँ बल्कि उनके कर्मों के अनुसार कर्म करने वाले भी हों। परन्तु वास्तविकता यह है कि ये लोग इस्लाम के नाम पर अपने स्वार्थों की पूर्ति कर रहे हैं। इस्लाम का तो उन्हें अलिफ़, बा का भी पता नहीं है, अपनी प्रतिष्ठा को प्रमाणित करना इनका प्रयास है। मुंह पर तो अल्लाह तआला का नाम है किन्तु दिल में केवल और केवल अपना स्वार्थ है। दुनिया में इस ज़माने में अल्लाह तआला ने वास्तविक तक़वा पैदा करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजा है अतः इन मुसलमानों की दशा देखकर इनका तो सुधार हो नहीं सकता, जब तक ये क़बूल न करें। हमें आभारी होना चाहिए कि हमें अल्लाह तआला ने तौफ़ीक़ दी कि उस मार्ग दर्शक को माना जिसको अल्लाह तआला ने इस ज़माने में भेजा, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सच्चा ग़ुलाम बनाकर। आपने हमें सहाबा के स्तर के विषय में भी बताया तथा उनके पीछे चलने के लिए भी नसीहत फ़रमाई। यह बताया कि सहाबा के नमूने किस प्रकार के हैं, तुम्हें उन्हें अनुसरणीय समझना चाहिए तथा उनके पीछे चलने का प्रयास करना चाहिए। अतः यही एक माध्यम है जिसे हम यदि अपने सामने रखें तथा आपकी बातों को समझने और उनके अनुसार कर्म करने का प्रयास करें तो वास्तविक मुसलमान भी बन सकते हैं।

अल्लाह तआला हमें सामर्थ्य प्रदान करे कि हम आपकी बातों के अनुसार कर्म करते हुए अल्लाह तआला और उसके रसूल का वास्तविक अनुसरण करने वाले और निर्देशों के अनुसार काम करने वाले हो जाएँ।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने मुकर्रमा अमतुल मजीद अहमद साहिबा के सद्गुण बयान फ़रमाए जिनका 9 जनवरी 2018 को निधन हुआ। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। हुज़ूर-ए-अनवर ने नमाज़ के बाद मरहूमा की जनाज़े की नमाज़ हाज़िर भी पढ़ाई।

TOLL FREE NO: 180030102131